* सकल घरेलु आय अथवा साधन लागत पर सकल घरेलु (व्यक्तिगत)

घरेलु सीमा मे एक लेखा वर्ष में सामान्य निवासी द्वारा मजदूरी, लागत, ब्याज तथा लाभ के रूप में अर्जित आय तथा पूँजी उपभोग मूल्य का जोड़ है।

$NDP_{FC} = GDP_{FC}$ — घिसावट व्यय

* राष्ट्रीय आय — साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{FC})

किसी एक लेखा वर्ष मे किसी देश की घरेलु सीमा में अर्जित कुल साधन आय (लगान + मजदूरी + ब्याज तथा लाभ) तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय का जोड़ साधन लागत पर राष्ट्रीय आय कहलाता है।

● राष्ट्रीय आय = (लगान + मजदूरी + वेतन + ब्याज + लाभ)

NNP_{FC} = (NDP_{FC} + विदेशों से शुद्ध साधन आय)

Note — इसमें घिसावट व्यय शामिल नहीं होता है।

* निजी आय — इसमें निजी क्षेत्र को मिलने वाली सभी आय भुगतान (जैसे- वेतन व मजदूरी, किराया, ब्याज, लाभ, मिश्रित आय आदि) तथा गैर-आय भुगतान (जैसे - सभी प्रकार के हस्तान्तरण भुगतान) आते हैं। इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय भी शामिल होता है।

निजी आय = निजी क्षेत्र को घरेलु उत्पाद से प्राप्त आय + विदेशों से शुद्ध साधन आय + सरकार से चालू हस्तान्तरण + शेष विश्व से शुद्ध चालू हस्तान्तरण + राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज

* व्यक्तिगत या वैयक्तिक आय — व्यक्तिगत आय से वह है जो किसी देश में एक वर्ष की अवधि मे व्यक्तियों अथवा परिवारों द्वारा वास्तविक रूप से प्राप्त होती है।

व्यक्तिगत आय = (राष्ट्रीय आय — निगम कर — अवितरित व्यवसायिक लाभ — सामाजिक सुरक्षा अंशदान + हस्तांतरण भुगतान)

वैयक्तिक प्रयोज्य आय — यह वह आय है जो व्यक्तियों को सभी स्त्रोतों से प्राप्त होती है तथा सरकार द्वारा आरोपित करों के भुगतान के बाद व्यक्ति के पास बचती है।

वैयक्तिक प्रयोज्य आय = वैयक्तिक आय − प्रत्यक्ष कर − सरकार की विविध प्राप्तियाँ

* राष्ट्रीय प्रयोज्य आय — राष्ट्रीय प्रयोज्य आय वह आय है जो किसी देश के निवासियों को सभी स्रोत (अर्जित आय एवं विदेशों से प्राप्त होने वाले चालू हस्तान्तरण भुगतानों) से उपभोग या बचत के लिए एक वर्ष में प्राप्त होती है।

राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = राष्ट्रीय आय (साधन लागत पर शुद्ध घरेलू आय + विदेशों से शुद्ध साधन आय) + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर + शेष विश्व से शुद्ध चालू हस्तान्तरण।